अगत सम्भालो, बचालो पानी।
अगत सम्भालो, बचालो पानी।

कुमारी नीलमणि देवी
जीन्द, हरियाणा

जल, जीवन की बखानी, कहानी आज है।
सुनो जल है तो कल है, पल है तो लाज है।।
कविता जल, जीवन की बखानी।
अगत सम्भालो, बचालो पानी।।
स्वच्छता का तुम महत्व जानो।
अनमोल है जल, कल को पहचानो।।
जल–से पैदा हुए देह–धारी।
व्यर्थ बहाओ, मति गई मारी।।
करते हो सब, तुम मनमानी।
सुपात्र खातर जाथर पानी।।
जल के बारे समझो संसार।
जीवन बचाना अपने अखत्यार।।
नदी नाले सब दूषित यहाँ हैं।
साफ सुधा–से ताल कहाँ है।।
कहते बचाओ, हिन्दुस्थानी।
सुपात्र खातर बचाओ पानी।।
पानी से ही जीवन अपना।
सार्थक हो भारत का सपना।।
पानी ने इंसान बनाए।
मतिमन्द रहते बिना नहाए।।
निःरोग रहे पानी से जवानी।
अगत सम्भालो, बचाओ पानी।।
पानी ही अमृत की धरा।
जल के बिना अधूरा नारा।।
जय–हिन्द भारतीय सब कहते।
पानी–से–सत–आनन्द लहते।।
दिव्य ज्योति, जल–से–जगानी।
सुपात्र–खात्तर–जाथर–पानी।।
रक्त दान कर गरीब बचाओ।
जल दान–से महिमा पाओ।।
विद्या दान परलोक बनाता।
अन्नदान ईमान जगाता।।
मुक्ति युक्ति से लिखी सयानी।
अगत सम्भालो बचाओ पानी।।
युक्ति से मुक्ति लिखी सयानी।
कविता जल जीवन की बखानी।।
गंगा–जल अमृत भारत का।
गीता–विज्ञान कृष्णा–पारथ का।।
विदवान–विदुषी पानी से हैं।
अन्न से मन, धन से दानी–से है।।
पाणी–से शुद्ध वाणी जानी।
सुपात्र खात्तर रखलो पानी।।
वर्षा–जल का भण्डारण हो।
सुखी जीव हित में कारण हो।।
सुनो–पढ़ो–लिखो करो वायदा।
मानवता का सुझाऊँ कायदा ।।
नीर समीर जागीर पुरानी।
अगत सम्भालो बचाओ पानी।।
मेल–जोल–से पानी बचेगा।
भारत जब इतिहास रचेगा।।
नई–पीढ़ी–को दुख नहीं सहना।
मानों–नीलमणि का कहना।।
ऋषि–मुनि सब कह गए ध्यानी।
अगत सम्भालो, बचाओ पानी।।

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

–बंकिम चन्द्र